कुफ्फ़ार व मुरतद्दीने ज़माना वहाबिया दयाबना व दीगर फ़िर्क़हाए बातिला से इत्तिहाद की दावत देने वाले, मुसलमानों की ख़ैर ख़्वाही का नाम लेकर दुनिया व आख़िरत बर्बाद करने वाले सुलह कुल्ली दुनिया परस्त मौलवियों के चेहरों को बेनक़ाब करने वाला और हक़ व हक़्क़ानियत का रास्ता बताने वाला मुख़्तसर जामेअ् रिसाला

इत्तिहादे बातिल की बैख़कनी

-: मुसन्निफ़ :-

शहज़ादा व मज़हरे शेर बेशाए अहले सुन्नत रईसुल फ़ुक़हा

ज़ुबदतुल अतक़िया, मुशाहिदे मिल्लत, हज़रतुल अल्लाम अश्शाह मुफ़्ती अबुल मुज़फ़्फ़र

मुहम्मद मुशाहिद रज़ा ख़ां साहब क़िब्ला हश्मती

पीलीभीती रज़ियल्लाहु तआला अन्हु

नाशिर

असकरी अकेडमी

दरगाह मज़हरे आला हज़रत, हश्मत नगर, पीलीभीत शरीफ़ (यू.पी.)

ANJUMAN RAZA-E-CHISHTI HASHMATI ACADEMY
Lions Of Sunnah In Burhanpur
Youtube chennal Subscribe kijiye

ब फ़ैज़ाने करम

शहज़ादए मज़हरे आला हज़रत शेरे हिन्दूस्तान फ़ातहे कश्मीर

शैख़े तरीक़त अल्लामा अलहाज अश्शाह

मुफ़्ती मोहम्मद इदरीस रज़ा ख़ान साहब क़िब्ला हश्मती

पीलीभीत शरीफ़ (यू.पी.)

اطال اللہ تعالیٰ عمرھما بالصحۃ والعافیۃ

कुफ़्फ़ार व मुरतद्दीने ज़माना वहाबिया दय्याबना व दीगर फ़िरक़हाए बातिला से इत्तिहाद की दावत देने वाले, मुसलमानों की ख़ैर ख़्वाही का नाम लेकर दुनिया व आख़िरत बरबाद करने वाले सुलह कुल्ली दुनिया परस्त मौलवियों के चेहरों को बे नक़ाब करने वाला और हक़ वहक़्क़ानियत का रास्ता बताने वाला मुख़्तसर जामेअ् रिसाला :

سیف الفقیہ الباسل علیٰ رقبۃ الاتحاد الباطل

अल मारूफ़ बिही

इत्तिहादे बातिल की बैख़ कनी

मुसन्निफ़ : शहज़ादए मज़हरे शेरे बेशए अहले सुन्नत रईसुल फ़ुक़हा

ज़ुबदतुल अतक़िया, मुशाहिदे मिल्लत, हज़रतुल अल्लाम अश्शाह मुफ़्ती

अबुल मुज़फ़्फ़र मुहम्मद मुशाहिद रज़ा ख़ां सा. क़िब्ला हश्मती

पीलीभीती रज़ियल्लाहु तआला अन्हु

नाशिर : ***अस्करी एकेडमी***

दरगाह मज़हरे आला हज़रत, ख़ानक़ाहे आलिया हशमतिया

हशमत नगर, पीलीभीत शरीफ़ (यू.पी.)

9430561227, 976086559

जुम्ला हुक़ूक़ बहक़्क़े नाशिर महफ़ूज़

नाम किताब : इस्तिह्सा बातिल की बैख़कुनी

मुसन्निफ़ : मज़हर शैर बेशए अहले सुन्नत हुज़ूर मुशाहिदे मिल्लत क़द्दसा सिर्रुहु

प्रुफ रीडिंग : उबैद इदरीस मो. नक़ीबुर्रहमान हश्मती सिद्दीक़ी (प्रिंसपल दारुल उलूम हश्मतुर्रज़ा, कानपुर)

कम्पोज़िंग : रज़वी कम्प्यूटर, इन्दौर (म.प्र.) 09827014799

नाशिर : अस्करी एकेडमी, पीलीभीत शरीफ़ (यू.पी.)

क़ीमत : **30/-** (तीस रूपये)

मिलने के पते

1) **रज़ा महल व हशमती मरकज़,** ख़्वाजा चौक, मस्जिद दलिसवालयान, डिगी बाज़ार, दरगाह अजमेर शरीफ़ Mob : 9828041116, 8094583786
2) **जामिआ अहले सुन्नत दारुल उलूम हश्मतुर्रज़ा,** हश्मत नगर, पीलीभीत शरीफ़
3) **जामिआ अहले सुन्नत दारुल उलूम हश्मतुर्रज़ा,** करनेलगंज, कानपुर Mob : 9760863598
4) **अल जामिअतुल हश्मतिया,** मुशाहिद नगर, माहिम, गोण्डा Mob : 9760468846
5) **अल जामिअतुल हादियतुल हश्मतिया,** दारुल उलूम अहमद उमर डोसा, भिवंडी - Mob : 9557125320
6) **शैरे रज़ा एकेडमी,** वसई रोड, ज़िला थाना
7) **सूफ़ी बुक डिपो,** इमलीपुरा, खण्डवा (म.प्र.) Mob : 9009347200
8) **बज़्मे मुहिब्बाने रज़ाए इदरीस,** रज़ा नगर, खरपट्टी, रोनी, सय्यदपुर, सीतामढ़ी Mob : 8868968008

शरफ़े इन्तिसाब

मस्लके आला हज़रत को हर दाख़िली व ख़ारजी नुक़सानात से
बचा कर क़ौमो मिल्लत के ईमान व अक़ीदे की हिफ़ाज़त करने वाली
अज़ीमुल मरतबत ज़ात
मज़हरे व ख़लीफ़ए आला हज़रत शेर बेशए अहले सुन्नत इमामुल
मुनाज़िरीन ग़ैज़ुल मुनाफ़िक़ीन महसूदुल मुआसिरीन
हज़रतुल अल्लाम अलहाज
अश्शाह मुफ़्ती अबुल फ़तह उबैदुर्रज़ा मुहम्मद हश्मत अली ख़ां साहब
क़िब्ला रज़वी लखनवी सुम्मा पीली भीती
व
सर ज़मीने कानपूर पर मज़हरे आला हज़रत शेर बेशए अहले सुन्नत
कुद्दिसा सिर्रहू के लगाए हुए गुलिस्ताने सुन्नियत को सींच कर
गुल व लाला से आरास्ता व पेरास्ता करने और तमाम बादे मस्मूम के
रुख़ को मोड़ने वाली शख़्सियत
आरिफ़ बिल्लाह वलिये कामिल ज़ुबदतुल मुत्तक़ीन कुदवतुल कामेलीन
ख़लीफ़ा व दामादे मज़हरे आला हज़रत
हज़रत अल्लामा मलिक नियाज़ अहमद सा. क़िब्ला हश्मती

نَوَّرَ اللّٰهُ مَرْقَدَهُمَا وَعَطَّرَ اللّٰهُ تُرْبَتَهُمَا

के नाम मन्सूब करके अपनी दुनियावी व उख़रवी सआदत समझते हैं
गर क़ुबूले उफ़्तद ज़हे इज़्ज़ो शरफ़
जुमला अराकीन बज़्मे मुहिब्बाने रज़ाए इदरीस, कानपूर

हज़रत मुशाहिदे मिल्लत ज़ाते बा बरकात जामेअ् कमालात

अज़ : जामेअ मअ़क़ूल व मन्क़ूल मंबए इल्मो हिकमत हज़रत अल्लामा अलहाज अश्शाह मुफ्ती शब्बीर हसन साहब क़िब्ला रज़वी, शैख़ुल हदीस अल जामिअतुल इस्लामिया क़स्बा रोनाही, ज़िला फ़ैज़ आबाद

نحمده ونصلی علی رسوله الکریم۔ اما بعد!

बाज़ अफ़राद इन्सान ऐसे होते हैं ज़ो फ़िक्रो नज़र के ताजवर होते हैं और छोटे छोटे वाक़ेआत व हादसात से ऐसे एसे नताइज का इस्तिख़राज कर लेते हैं ज़ो ग़ैरों के लिये भी दर्से इबरत व मशअले राह होते हैं और बाज़ अफ़राद इन्सान इस वस्फ़ से ख़ाली होते हैं, उन के सामने बड़े से बड़ा वाक़िआ रू नुमा हो जाता है मगर उस से नतीजा बर आमद करने से क़ासिर रहते हैं और ऐसे ही बाज़ अफ़राद इन्सान वह होते हैं ज़ो अपनी ज़िन्दगी क़ौमो मिल्लत की फ़लाह व बहबूद के लिये वक़्फ़ कर देते हैं और बाज़ इस वस्फ़ से ख़ाली व आरी होते हैं अगर ग़ौरो फ़िक्र से काम लिया जाए तो यह हक़ीक़त रोज़े रौशन की तरह अयां हो जाएगी कि दर हक़ीक़त इन्सान वही है, इन्सानियत उसी को ज़ेब देती है जिस की ज़िन्दगी का कुछ हिस्सा क़ौमो मिल्लत को उरूज व इरतिक़ा व इज़्ज़त व कामरानी व सआदते जावेदानी की ला ज़वाल दौलत से मालामाल करने के लिये वक़्फ़ हो, जिस के उम्रे अज़ीज़ का हर लम्हा व हर साअत क़ौमो मिल्लत के गेसू संवराने के लिये आशुफ़्तगी और हैरानी व परेशानी में गुज़र रही हो, जो ख़ुद हैरान व परेशान रह कर अपनी क़ौम को पुर शिकोह और पुर वक़ार ज़िन्दगी दिलाने का ख़्वाहां हो और हौसला बलन्द रखता हो कि जिस के कोहे शिकन हौसला से हिमालय पहाड़ लरज़ां हो, जिस की ख़ुदा दाद ताक़त व कुव्वत का अकसर व बेशतर हिस्सा बन्दगाने ख़ुदा की ख़िदमात और उन के लैलो नहार को पुर वक़ार बनाने में सर्फ़ होता हो जो अपनी जिद्दो जहद और सईये पैहम से इन्सानियत को अज़मत व बरतरी, सर

बलन्दी व सर फ़राज़ी अता कर सकता हो जो अपने अख़्लाख़ व किरदार, रफ़्तार व गुफ़्तार, अक़वाल व अफ़आल में यकसानियत रखता हो।

अलहम्दु लिल्लाह ! क़ातए फ़ितनए नजदियत व वहाबियत मज़हरे आला हज़रत अज़ीमुल बरकत अलैहिमुर्रहमतो वर्रिज़वान शहज़ादए हुज़ूर शेर बेशए अहले सुन्नत रज़ियल मौला तआला अन्हु अपने वालिदे गिरामी के फ़रज़न्दे अरजुमन्द अपने वक़्त के मुमताज़ आलिमे दीन व शरीअत थे, उलूमे नक़लिया व अक़लिया के माहिर, इल्मो हिकमत व शरीअत व तरीक़त के जामेअ थे अपने वालिदे गिरामी अलैहिर्रहमा के नुक़ूशे क़दम पर चलने वाले अपने वक़्त के ज़बरदस्त मुनाज़िरे आज़म थे और الولد سر لابیه के सहीह मिस्दाक़ थे और उनके सच्चे जा नशीन थे पूरी ज़िन्दगी मस्लके आला हज़रत की नशरो इशाअत के लिये वक़्फ़ थी, हक़ गोई उन का शेवा था, पूरे दर्से निज़ामी पर क़ुदरत व इक़्तिदार रखते थे ।फ़क़ीर जिस ज़माने में नानपारा अज़ीज़ुल उलूम में ख़िदमते तदरीस के फ़राइज़ अन्जाम दे रहा था उस वक़्त वहाँ तशरीफ़ लाया करते थे और हज़रत बुलबुले हिन्द अश्शाह मुफ़्ती रजब अली साहब रज़ियल मौला तआला अन्हु से बहुत अच्छे मरासिम थे उनके आपस में इल्मी मुज़ाकरे भी होते थे फ़क़ीर से हज़रत मुशाहिदे मिल्लत ने दरयाफ़्त फ़रमाया कि मौलाना ! यह अरबी कौन सा महीना है ? फ़क़ीर ने अर्ज़ किया कि हुज़ूर ! जुमादल ऊला या जुमादल उख़रा है। चूँकि उमूमन लोग जुमादल ऊला व जुमादल आख़िर बोल दिया करते हैं जो दरुस्त नहीं है इस लिये फ़ौरन हज़रत मेरा मुंह देखने लगे और बहुत ख़ुश हुए और कलेमाते दुआइया फ़रमाया और जब भी वहाँ तशरीफ़ लाते फ़क़ीर से महब्बत फ़रमाते रहे और कभी नहवी व मन्तक़ी मसाइल पर गुफ़्तुगू भी फ़रमाते ज़ैद ज़रब की नहवी तरकीब में वह फ़रमाते कि जब ज़ैद हक़ीक़तन फ़ाइल है तो उसे फ़ाइल मुक़द्दम कहने में क्या हरज है ? और नहवियों का फ़ाइल की तारीफ़ में इस तरह कहना कि फ़ाइल हर वह इस्म है कि जिस से पहले फ़ेअल या शुबा फ़ेअल व ग़ैरह इला आख़िरा, यह उन की अपनी इस्तिलाह है और बहुत से मसाइल नहविया और मन्तक़िया पर गुफ़्तुगू

फ़रमाते जिन से उन की जलालते इल्मी का अन्दाज़ा होता है कि पूरे दर्से निज़ामिया पर इक़्तिदार के साथ इस्तेहज़ार भी रखते थे।

मज़हरे आला हज़रत अल्लामा अलहाज मुशाहिदे मिल्लत हज़रत मुफ़्ती मुशाहिद रज़ा ख़ां साहब क़िब्ला अलैहिर्रहमतो वर्रिज़वान की रफ़ीअ ज़िन्दगी अल्लाह तआला और उस के रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की अता से जामेअ कमालात नज़र आती है आप ज़िन्दगी का हर लम्हा क़ौमो मिल्लत के ज़ुल्फ़े परेशां और गेसूए पेचां को संवारने और क़ौमो मिल्लत को इश्क़ो महब्बते रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का दर्स देने और उन्हें इस दौलते ला ज़वाल से मालमाल करने में मसरूफ़ नज़र आता है, आप इल्मो हिकमत, ज़हानत व फ़तानत, बसीरत व तदब्बुर, बलन्द सीरत, हुस्ने अमल के पैकरे जमील थे तमाम तर उलूमे मुतदावला में ऐसी दस्तगाह और क़ुदरत हासिल थी कि माहेरीने उलूमो फ़ुनून जब आप की नुकता आफ़रीनी को देखते या सुनते तो वरतए हैरत में पड़ जाते वह बड़े ही नुकता संज और दक़ीक़ा रस थे जिन मसाइल पर तवज्जोह फ़रमाते तहक़ीक़ाते अनीक़ा रशीक़ा का हक़ अदा कर देते थे। मसाइले शरइय्या पर उन की गहरी नज़र थी उन के मजमूअए फ़तावा से हज़रत मौसूफ़ की फ़िक़ही बसीरत व बसारत का ब ख़ूबी अन्दाज़ा लगाया जा सकता है फ़क़ीर की मालूमात के मुताबिक़ हज़रत मुशाहिदे मिल्लत अलैहिर्रहमा ने अपने दारुल उलूम हश्मतुर्रज़ा हश्मत नगर, पीलीभीत शरीफ़ के अलावा कहीं किसी दूसरे दारुल उलूम व मदरसा में दर्सो तदरीस का काम शायद अन्जाम नहीं दिया चूँकि वालिदे गिरामी शेरे बेशए अहले सुन्नत मज़हरे आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम की तरह इमामे इश्क़ो महब्बत आला हज़रत अज़ीमुल बरकत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से बहुत ही गहरी व सच्ची व वालिहाना अक़ीदत थी इस लिये अपने वालिदे गिरामी के नुक़ूशे क़दम पर चलते हुए और उन्हीं की रविश व तर्ज़े अमल को अपनाते हुए पूरी ज़िन्दगी इमामे अहले सुन्नत आला हज़रत अज़ीमुल बरकत रज़ियल्लाहु अन्हु के इश्क़ो महब्बत में डूबे हुए पैग़ामात को मुल्क के गोशे गोशे में आम फ़रमाने की

कोशिश फ़रमाई उन के पैग़ामाते महब्बत को आम करना और उन्हीं क़ी तब्लीग़ व तरवीजो इशाअत करना उनकी ज़िन्दगी का ओढ़ना बिछोना था वह फ़रमाया करते थे कि इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी अलैहिर्रहमतो वर्रिज़वान ने किताब व सुन्नत, इज्माए सहाबा, अक़्वाले अइम्मा, सूफ़ियाए किराम और उलमाए हक़ के अक़्वाल और मामूलात की रौशनी में .जो मज़हबे हक़ की वज़ाहत फ़रमाई है काफ़ी है फ़ाज़िले बरैलवी अलैहिर्रहमा के इस क़ौल (मज़हबे हक़ वही है जो कुछ मेरी किताबों से ज़ाहिर है) पर सख़्ती से कार बन्द थे उन का कहना था कि आला हज़रत अज़ीमुल बरकत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी अलैहिर्रहमतो वर्रिज़वान की किताबों में क या कुछ नहीं है शरई उसूलो फ़ुरूअ़ के अलावा कौन से वह दीनी मुबाहस हैं जिन पर क़लमे हक़ रक़म न चला हो मस्लके अहले सुन्नत व जमाअत के अकाबिर उलमा ने उन्हीं के दीनी अफ़कार व नज़रियात की तशहीर फ़रमाई। उन अकाबिरे उलमाए किराम के अस्माए गिरामी भी बयान फ़रमाते थे। मौला तआला हज़रत मौसूफ़ अलैहिर्रहमा की क़ब्रे मुबारक पर रहमत व अनवार की बारिश नाज़िल फ़रमाए और उन के रूहानी फ़्यूज़ो बरकात से हम जमाअते अहले सुन्नत को मुस्तफ़ीज़ व मुस्तनीर फ़रमाए। आमीन बिजाहि हबीबिहिल करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम।

फ़क़त

मोहताजे दुआ व गदाए बाबे रज़ा

शब्बीर हसन रज़वी गुफ़िरालहु अल क़दीरुल क़वी

बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम

क्या फ़रमाते हैं उलमाए अहले सुन्नत इस मस्अले में कि एक आलिमे अहले सुन्नत ने अपने मज़मून में एक हिन्दूस्तानी हुकूमत की लिस्ट में मुस्लिम आबादी जो सहीहुल अक़ीदा मुसलमानों के साथ बद अक़ीदा व मुरतद व गुमराहों पर मुश्तमिल है, उन सब को अपना रवैया बदलनेप और बाहमी तौर पर मुत्तहिद व मुत्तफ़िक़ हो जाने का मशवरा दिया है, वह लिखते हैं : हिन्दूस्तानी तीन करोड़ उम्मत (जिस में बद अक़ीदा व गुमराह भी शामिल हैं) अगर अपने रवैया को बदल दे और बाहमी तौर पर मुत्तहिद व मुत्तफ़िक़ हो जाएं तो बहुत जल्द इस मुल्क का मन्ज़र नामा तब्दील हो सकता है....। आगे लिखते हैं :

واعتصموا بحبل الله جميعا ولا تفرقوا

(तर्जमा के बाद लिखते हैं) अगर उम्मते मुस्लिमा इस इरशादे मुबारक की आमिल हो जाए तो मज़हब से ले कर सियासत तक, हयात से ले कर ममात तक और दुनिया से लेकर आख़िरत तक हर महाज़ पर कामयाबी उस के क़दम चूमेगी.....। फिर आगे लिखा : ऐ ख़ुदाए पाक की वहदानियत पर यक़ीन रखने वालो ! उठो इत्तिहाद की चादर जहांने इस्लाम पर तान दो।

उख़ुव्वत व मसावात का अमली मुज़ाहिरा करो और बाहमी इन्तिशार व इफ़्तिराक़ व इख़्तिलाफ़ को मिटा कर अल्लाह की रस्सी मज़बूती से थाम लो। बे शक दुनिया व आख़िरत में इज़्ज़त व कामयाबी तुम्हारे लिये ही है। ..... क्या क़ुरआन व हदीस की रौशनी में इस आलिमे अहले सुन्नत के अक़वाल दुरुस्त हैं ? क्या हुकूमत की फ़ेहरिस्त में हिन्दूस्तान तीन करोड़ आबादी जिस को हुकूमत बनाम मुस्लिम शुमार करती है जिस में सहीहुल अक़ीदा सुन्नी मुसलमान, क़ादयानी, राफ़ज़ी, बोहरा, ख़ोजा, वहाबी, देवबन्दी, नेचरी, सुलह कुल्ली वग़ैरह सभी शामिल हैं। उन से सहीहुल अक़ीदा सुन्नी मुसलमानों का इत्तिहाद मुमकिन है ? जब कि मज़मून निगार ने दावा किया है कि यह इत्तिहाद मज़हब से ले कर सियासत तक, हयात से लेकर ममात तक, दुनिया से ले कर आख़िरत

तक काम आएगा। कुरआनो हदीस की रोशनी में जवाब मरहमत फ़रमा कर सहीह रहनुमाई फ़रमाएं।

अल मुस्तफ़्ती : हाजी अहमद उमर डोसा क़ादरी अशरफ़ी बरकाती रज़वी हश्मती, मनीष मार्केट, बम्बई

باسمہ سبحانہ وتعالیٰ

اللہ رب محمد صلی علیہ وسلما وعلیٰ ذویہ وصحبہ ابد الدھور و کرما

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ هَدَانَا اِلَی الصِّرَاطِ الْمُسْتَقِیْمِ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی حَبِیْبِهِ الَّذِیْ اَظْهَرَ الطَّرِیْقَ الْمُبِیْنَ وَ عَلٰی اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ اَهْلِ الرُّشْدِ وَالْهِدَایَةِ وَالْیَقِیْنِ لَا سِیَّمَا فِی الْفِتَنِ فِیْ كُلِّ الزَّمَانِ وَالْحِیْنِ اَللّٰهُمَّ اَرِنَا الْحَقَّ حَقًّا وَارْزُقْنَا اِتِّبَاعَهٗ وَاَرِنَا الْبَاطِلَ بَاطِلًا وَارْزُقْنَا اجْتِنَابَهٗ

अल जवाब बि औनिल मलिकिल वह्हाब : सवाल में जिस सुन्नी आलिम कहलाने वाले का मज़मून नक़्ल किया गया है वह अगर फ़िर्क़ा बातिला के अक़ाइदे कुफ़्रिया क़तइय्या यक़ीनिया जानता है (जो इस में दर्ज हो रहे हैं) फिर उन को मुसलमान जानता है तो वह ख़ुद अपने इस मज़मून से अव्वलन न आलिम, न मोमिन, न मुसलमान, बल्कि मुरतद काफ़िर हो गया।

सवाले मज़कूर में जिस मजूने मुरक्कब व मअजूने नजिस का ज़िक्र किया गया है उस को रद्द करने के लिये तफ़सीलन एक किताब की ज़रूरत है लेकिन यहाँ इख़्तिसार व इजाज़ के साथ ज़ब्ते तहीरर कर रहा हूँ यह आलिम अहले सुन्नत कहलाने वाला बे दीन तौहीद का दावेदार तो है। फिर यह बताए कि रवाफ़िज़ में एक फ़िर्क़ा नसीरी जो हज़रत मौलाए कायनात अली मुरतज़ा कर्रमल्लाहु वजहहुल करीम को ख़ुदा कहता है और उस पर एक शेअर भी एक मुशाइरा में पढ़ा गया :

लोग बे वजह नसीरी को बुरा कहते हैं
कुछ तो देखा है अली को जो ख़ुदा कहते हैं

बताए यह बे दीन आलिम अहले सुन्नत कहलाने वाला इद्दआए वहदानियत कहाँ गया फ़िर्क़ा नसीरिया के सामने ? क्या हुज़ूर ख़ातिमुन्नबिय्यीन عالم ما كان وما يكون का कलमा पढ़ने वालों और हुज़ूर के पीछे नमाज़ पढ़ने वालों को हुज़ूर सरवरे आलम अलैहिस्सलातो वत्तस्लीम ने नाम ले कर मस्जिद से न निकाला ? बईं तौर اُخْرُجْ يَا ابْنَ فُلَاں اُخْرُجْ يَا ابْنَ فُلَاں मुनाफ़िक़ीन को, कलमा पढ़ने वालों को, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के पीछे पांच वक़्त नमाज़ पढ़ने वालों क़ो मस्जिद से निकाल दिया गया, उस का दावा इत्तिहाद कहाँ बाक़ी रहा। ख़ाकसारी मुरतद इनायतुल्लाह मशरिक़ी तहरीके ख़ाकसार का बानी क्या इस का क़ाइल नहीं कि नमाज़, रोज़ा, हज, ज़कात कोई भी ज़रूरी नहीं, सिर्फ़ इस्लाम में जिहाद ज़रूरी है और वह लिखता है कि जो भी हज करने जाते हैं, वह लोग बुत परस्ती करते हैं और मुसलमानों से ख़ुदा राज़ी नहीं है। अंग्रेज़ों, ईसाइयों से ख़ुदा राज़ी है कि उस ने अंग्रेज़ों को हुकूमत दे दी और ज़मीन का बादशाह बना दिया।

अब बताए सुन्नी आलिम कहलाने वाला बे दीन ऐसे कलमा पढ़ने वालों क़ो जो अहकामे इस्लामी को, फ़राइज़े इस्लाम को ग़ैर ज़रूरी बताए और क़वानीने इस्लाम का इस्तेहज़ा करने वालों क़ो और तमाम मोमिनीन को जो हज करने जाते हैं उन को बुत परस्त बताने वाले को साथ ले कर और उस को मुसलमान गरदान कर ख़ुद काफ़िर मुरतद हुआ या नहीं ? और वह रवाफ़िज़ जो ख़ुदा की वहदानियत के क़ाइल ही नहीं और क़ुरआने अज़ीम को ख़ुदा की किताब न मान कर बयाज़े उस्मानी मानते हैं और मौजूदा क़ुरआने अज़ीम को मुहर्रफ़ कहते हैं तो उस का दावा बर बुनियाद तोहीद, बातिले महज़ हुआ या नहीं ? जब अक़ीदए तौहीद व क़ुरआन ही बाक़ी नहीं तो यह सुन्नी आलिम कहलाने वाला नाम निहाद आलिम अहले सुन्नत को मुशरेकीन से इत्तिहाद करने में और मुशरिक बनने में क्या चीज़ सद्दे राह है। और फिर : كُلُّ النَّاسِ وَكُلُّ الْمَخْلُوْقِ مُتَّحِدٌ

पर अमल करने में क्या पसो पेश है। क़ुरआन की आयतें बे महल पढ़ कर तहरीफ़े मअनवी की है यह आयत وَاعْتَصِمُوْا بِحَبْلِ اللهِ جَمِيْعًا وَّلَا تَفَرَّقُوْا। मोमिनीन के लिये है और नमाज़ व रोज़ा व ज़कात, ख़ुदा की वहदानित व ईमान जिन का मुनकिर काफ़िर मुरतद है, हर गिज़ मोमिन नहीं और वह काफ़िर मुरतद है मोमिन नहीं। तो उन के साथ इत्तिहाद नहीं है बल्कि कुफ़्र व इस्लाम मुत्तहिद करने का कुफ़री मन्सूबा है : अल अयाज़ बिल्लाहि तआला।

इत्तिहादे बातिल की दावत देने वाला मस्जिदे ज़िरार का वाक़िआ भूल गया। क़ुरआने अज़ीम का यह ऐलाने ज़ीशान जो अज़मते मुस्तफ़ा अलैहिस्सलातो वस्सलाम पर शाहिदे अद्ल है और मुनाफ़िक़ीन व मुरतद्दीन व बे दीनों पर बरक़े खुदावन्दी। وَالَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مَسْجِدًا ضِرَارًا وَّ كُفْرًا

तर्जमा : और वह जिन्होंने मस्जिदे बनाई नुक़साना पहुँचाने को और कुफ़्र के सबब।

वह मस्जिद जो कलमा पढ़ने वालों ने बनाई, नमाज़, रोज़ा और ज़कात देने वालों ने बनाई, दाढ़ी वालों ने बनाई, अहकामे इस्लामी अदा करने वालों ने बनाई, इस्लामी सूरत और ज़ाहिरी हाल भी इस्लामी मगर ग़ैब दां नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने उन बद बातिन मुनाफ़िक़ीन की बनाई हुई मस्जिद को ढा देने का हुक्म दिया और हस्बुल हुक्म ढा कर जला दी गई।

सुन्नी आलिम कहलाने वाला अब भी न बेदार होगा तो कब होगा ? अगर मुनाफ़िक़ीन, मुरतद्दीन और बे दीनों से इत्तिहाद रवा होता तो मस्जिदे ज़िरार का वाक़िआ पेश न आता। हादिये कायनात सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने नमाज़ पढ़ना, रोज़ा रखना, ज़कात देना, अहकामे इस्लामी अदा करना, इस्लामी सूरत बनाना न देखा और वह मस्जिद जो मस्जिद न थी बल्कि मुनाफ़िक़ीन का अड्डा था। इस नाम निहाद मस्जिद को ढा देने का हुक्म दिया, बताओ इत्तिहाद कहाँ बाक़ी रहा। तमाम फ़िरक़हाए बातिला से इत्तिहाद, इत्तिहादे बातिल हुआ या नहीं ? फिर भी यह बद बातिन सुन्नी आलिम कहलाने वाला नाम निहाद फ़िर्क़ों से इत्तिहादे बातिल की दावत दे। अल अयाज़ बिल्लाहि तआला।

मुरतद, बद दीन ख़ाकसारियों के कुफ़्रियात तफ़सीलन देखने के लिये अहले सुन्नत व जमाअत की कुतुबे मुबारका का मुतालआ किया जाए और हुक्मे जब्बार बर ख़ाकसार का मुतालआ करे और मुरतद बे दीन मशरिक़ी को उस के किरदारे बद अतवार और नज़रियाते कुफ़्रिया उस की किताब तज़किरा में देखें। मुरतद्दीने ज़माना राफ़ज़ियों के फ़िरक़ा बातिला के अक़ाइदे कुफ़्रिया की तफ़सीली मालूमात के लिये मुहद्दिस अब्दुल अज़ीज़ देहलवी अलैहिर्रहमा की किताब तोहफ़ए अस्ना अशरिया का मुतालआ करें और आयाते बय्यिनात और نصيحة الشيعه वग़ैरह का मुतालआ करें।

वह सुन्नी आलिम कहलाने वाला मुद्दइये इत्तिहाद बर बिनाए तौहीद क़ुरआने अज़ीम का वह रौशन बयान पढ़ ले कि दिल में इश्क़े मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की शमा रौशन हो और ईमान की अमान पाए और देखे कि फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु ताला अन्हु का यह ज़र्रीन कारनामा जो ख़िरमने इत्तिहादे बातिल पर बर्क़े शरर बार है। आक़ाए कायनात सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की हयाते ज़ाहिरी में एक मुसलमान और यहूदी के खेत के पानी से मुतअल्लिक़ झगड़ा था उन दोनों ने अपने मुआमला को जाने अद्ल व इन्साफ़ सरवरे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की बारगाह में पेश किया। हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने जो फ़ैसला सादिर फ़रमाया, वह यहूदी के हक़ में हुआ। उस मुसलमान ने अपने दिल में ख़याल किया कि हुज़ूर अलैहिस्सलातो वस्सलाम ने तालीफ़े कुलूब के लिये यहूदी के हक़ में फ़ैसला फ़रमा दिया है। हालांकि फ़ैसला मेरे हक़ में होना चाहिये था लिहाज़ा उस ने यहूदी से कहा, इस मुआमले को हम हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की बारगाह में पेश करेंगे। यहूदी ने कहा, जब आप के आक़ा सरवरे कायनात सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़ैसला फ़रमा दिया तो अब और किसी से फ़ैसला लेने की क्या ज़रूरत है? मगर वह मुसलमान कहलाने वाले ने उस मुआमले को हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की बारगाह में पेश किया। हज़रत फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने पूछा कि रसूलुल्लाह की

बारगाह में हाज़िर हुए ? तो यहूदी ने अर्ज़ किया : हुज़ूर ! आप की बारगाह में हाज़िर होने से पहले रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की बारगाह में हाज़िर हो चुके हैं और वहाँ से फ़ैसला मेरे हक़ में हुआ है, उन्हें तस्लीम नहीं। दो बारह आप की बारगाह में हाज़िर आए। इतना सुनना था कि फ़ारूक़े आज़म (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) का तेवर बदल गया। मकान के अन्दर तशरीफ़ ले गए। बाहर आए तो हाथ में तलवार थीऔर उस नाम निहाद मुसलमान का सर क़लम कर दिया। फ़रमाया, जो बारगाहे रसूल अलैहिस्सलातो वस्सलाम से हो कर मेरे पास फ़ैसला लेने आए उस के लिये उमर का यही फ़ैसला है। पूरे शहर मदीना में एक शोर बरपा हो गया कि उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने एक मुसलमान को क़त्ल कर दिया। यह ख़बर ताजदारे कायनात सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को पहुँचाई गई कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने एक मुसलमान को क़त्ल कर दिया। हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को बुला कर दरयाफ़्त किया, क्या तुम ने एक मुसलमान को क़त्ल कर दिया है ? हज़रत सय्यदना उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह उमर ने किसी मुसलमान को नहीं क़त्ल किया है और अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त जल्ला जला लुहू ने जो वही नाज़िल होने वाली थी हज़रत सय्यदना उमर रज़ियल्लाहु तआलाअन्हु की ज़बान पर जारी फ़रमा दी और आप ने फ़रमाया :

فَلَا وَرَبِّكَ لَا يُؤْمِنُوْنَ حَتّٰى يُحَكِّمُوْكَ فِيْمَا شَجَرَ بَيْنَهُمْ
ثُمَّ لَا يَجِدُوْا فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ حَرَجًا مِّمَّا قَضَيْتَ وَيُسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا

तर्जमा : तो ऐ महबूब तुम्हारे रब की क़सम वह मुसलमान न होंगे जब तक अपने आपस के झगड़े में आप को हाकिम न बनाए, फिर जो कुछ तुम हुक्म फ़रमाओ अपने दिलों में उस से रुकावट न पाएं। और जी से मान लें। (सूरतुन्निसाअ, आयत 65)

यह आयते करीमा सुन्नी आलिम कहलाने वाले की दावते इत्तिहादे

बातिल पर सैफ़े बुर्रां है। इत्तिहादे बातिल की दावत देने वाला सबक़ सीखे, अक़्ल के नाख़ुन ले इस वाक़िआ ने इत्तिहादे बातिल की धज्जियां बिखेर दीं। इत्तिहादे बातिल के नापाक मन्सूबे को तार तार कर दिया, ख़लीफ़ए अव्वल अमीरुल मोमिनीन हज़रत सय्यदना अबू बक्रसिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अपने दौरे ख़िलाफ़त में मुनकिरीने ज़कात से जिहाद फ़रमाया, जब कि वह मुनकिरीने ज़कात तमाम ज़रूरियाते दीन कोमानते थे। नमाज़, रोज़ा, हज के पाबन्द थे। ज़कात का इनकार भी उन्होंने किया तो मुतलक़न न किया, बल्कि इस तावील के साथ कि कुरआने पाक में आया है : خُذْ مِنْ اَمْوَالِهِمْ صَدَقَةً

तर्जमा : लीजिये मोमिनों के मालों से सदक़ा यानी ज़कात।

तो उन मुनकिरीने ज़कात ने यह तावील की कि ज़कात लेने का हुक्म हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को था। उस के मुख़ातब हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम हैं। लिहाज़ा वह दुनिया से तशरीफ़ ले गए अब ज़कात लेने का हक़ किसी को नहीं है। अब ज़कात मन्सूख़ हो गई। हज़रत ख़लीफ़ए अव्वल अमीरुल मोमिनीन (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) ने तलवार बलन्द फ़रमाई और मुनकिरीने ज़कात से जिहाद की तय्यारी फ़रमाई दीगर सहाबए किराम ने अर्ज़ किया, ऐ अमीरुल मोमिनीन ! इस वक़्त हालात नाज़ुक हैं, असाकिर मुस्लेमीन दुश्मनाने इस्लाम से बेरूनी ममालिक में जिहाद में मसरूफ़ हैं। अब यह अन्दुरूने ख़ाना इस वक़्त इन मुनकिरीने ज़कात से जिहाद करना मुनासिब नहीं। लिहाज़ा यह जिहाद मुनकिरीने ज़कात से हिकमते अमली और दीनी सियासत की बिना पर मुलतवी किया जाए तो अमीरुल मोमिनीन सय्यदना अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया कि तुम्हारी मस्लेहत इतलवा चाहती है, तुम्हारी हिकमत दुनियावी अवारिज़ को देख रही है। मगर मैं तन्हा ही तलवार ले कर उन से जिहाद करूँगा। जब तक मेरे हाथ में ऊंट की लगाम है और एक रस्सी भी ज़कात के मद से बाक़ी रहेगी। यहाँ तक कि वह रुजूअ करें। आप ने उन से जिहाद फ़रमाया और मुनकिरीने ज़कात ने रुजूअ किया। इस वाक़िआ को जलीलुल क़द्र सहाबी हज़रत अबू हुरैरह

रज़ियल्लाहु तआला अन्हु इस तरह बयान फ़रमाते हैं :

لَمَّا تُوُفِّيَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَاسْتَخْلَفَ اَبُوْ بَكْرٍ بَعْدَهٗ وَكَفَرَ مَنْ كَفَرَ مِنَ الْعَرَبِ قَالَ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ لِاَبِيْ بَكْرٍ كَيْفَ تُقَاتِلُ النَّاسَ وَقَدْ قَالَ رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اُمِرْتُ اَنْ اُقَاتِلَ النَّاسَ حَتّٰى يَقُوْلُوْا لَا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ فَمَنْ قَالَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ عَصِمَ مِنِّيْ مَالَهٗ وَ نَفْسَهٗ اِلَّا بِحَقِّهٖ وَحِسَابُهٗ عَلَى اللهِ فَقَالَ اَبُوْ بَكْرٍ وَاللهِ لَاُقَاتِلَنَّ مَنْ فَرَّقَ بَيْنَ الصَّلٰوةِ وَالزَّكٰوةِ فَاِنَّ الزَّكٰوةَ حَقُّ الْمَالِ وَاللهِ لَوْ مَنَعُوْنِيْ عِقَالًا كَانُوْا يُؤَدُّوْنَهَا اِلٰى رَسُوْلِ اللهِ ﷺ لَقَاتَلْتُهُمْ عَلٰى مَنْعِهَا قَالَ عُمَرُ فَوَاللهِ مَا هُوَ اِلَّا رَاَيْتُ اَنَّ اللهَ شَرَحَ صَدْرَ اَبِيْ بَكْرٍ لِلْقِتَالِ فَعَرَفْتُ اَنَّهُ الْحَقُّ

यानी जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम इस जहाने फ़ानी से तशरीफ़ ले गए और सय्यदना अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ख़लीफ़ा हुए तो कुछ अरब मुरतद हो गए। हज़रत सय्यदना सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने उन पर जिहाद का इरादा किया तो हज़रत सय्यदना उमर फ़ारूक़ (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) ने ख़लीफ़ए अव्वल से अर्ज़ किया, या अमीरुल मोमिनीन ! आप क्यों कर उन से जिहाद करेंगे । हालांकि सरकारे मदीना सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने जिहादे बा कुफ़्फ़ार का हुक्म दिया है। उस वक़्त तक कि लोग ला इलाहा इल्लल्लाह कह लें यानी तमाम ज़रूरियाते दीन पर ईमान ले आएं तो जो ईमान ले आया उस ने अपनी जान व माल को मुझ से महफ़ूज़ कर लिया ।मगर इस्लाम के मुआमले में और हिसाब उस का अल्लाह तआला के क़ब्ज़ए कुदरत में है। तो हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) ने फ़रमाया ख़ुदा की क़सम मैं ज़रूर ज़रूर उस शख़्स पर जिहाद करूँगा जो नमाज़ और ज़कात में फ़र्क़

करे क्यों कि नमाज़ इबादते बदनी है और ज़कात इबादते माली है। ख़ुदा की क़सम अगर वह उस रस्सी को भी रोकेंगे जो हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के ज़मानए ज़ाहिरी में मद्दे ज़कात में देते थे तो उस के लिये भी मैं उन से ज़रूर जिहाद करूँगा। हज़रत सय्यदना उमर फ़ारूक़े आज़म (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) फ़रमाते हैं कि ख़ुदा की क़सम मैं ने देखा कि अल्लाह तआला ने जिहाद के लिये अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि ख़ुदा की क़सम मैं ने देखा कि अल्लाह तआला ने जिहाद के लिये अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का सीना खोल दिया है और मैं ने पहचान लिया है कि वही हक़ है जो आप की राए है।

दूसरी रिवायत में रज़ीन ने हज़रत सय्यदना फ़ारूक़े आज़म (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) से रिवायत की है अमीरुल मोमिनीन हज़रत सय्यदना फ़ारूक़े आज़म (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) से फ़रमाते हैं :

لَمَّا قَبِضَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ اِرْتَدَّتِ الْعَرَبُ وَ قَالُوْا لَا نُؤَدِّیْ زَکٰوۃً فَقَالَ لَوْ مَنَعُوْنِیْ عِقَالًا تَجَاهَدْتُّهُمْ عَلَيْهِ فَقُلْتُ يَا خَلِيْفَةَ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ تَاَلَّفَ النَّاسَ وَارْفُقْ بِهِمْ فَقَالَ لِیْ اَجَبَّارٌ فِی الْجَاهِلِيَّةِ وَ خَوَّارٌ فِی الْاِسْلَامِ اِنَّهٗ قَدْ اِنْقَطَعَ الْوَحْیُ وَتَمَّ الدِّيْنُ وَاَنَا حَیٌّ

यानी जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ज़ाहिरी दुनिया से तशरीफ़ ले गए, कुछ अरब मुरतद हो गए उन्हों ने कहा कि हम ज़कात नहीं अदा करेंगे तो हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) ने फ़रमाया कि मद्दे ज़कात में एक रस्सी भी बाक़ी रह जाएगी तो उस के लिये भी उन पर जिहाद करूँगा। तो हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) फ़रमाते हैं कि मैं ने अर्ज़ किया ऐ अमीरुल मोमिनीन! रसूलुल्लाह के ख़लीफ़ए बरहक़! उन लोगों के साथ नर्मी व महरबानी कीजिये तो सय्यदना सिद्दीक़े अकबर (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) ने मुझ को फ़रमाया किया ज़मानए जाहिलियत में तुम बहुत सख़्त बहादुर थे और इस्लाम लाकर बुज़दिल व पिलपिले हो गए।

तहक़ीक़ वहिये रब्बानी ख़त्म हो चुकी और दीने इस्लाम मुकम्मल होगया क्या मेरे ज़िन्दा रहते हुए उस में कुछ कम किया जा सकता है।

सुन्नी आलिम कहलाने वाला, तीस करोड़ आबादी पर गुरूर घमण्ड करने वाला, मुरतद्दीने ज़माना के साथ इत्तिहादे बातिल की दावत देने वाला यह बताए कि हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़ए बरहक़ सिद्दीक़े अकबर राज़दारे शरीअत मुअल्लिमे सियासत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) ने उन से जिहाद फ़रमाया जो कलमए तैय्यिबा ला इलाहा इल्लल्लाह पढ़ने वाले थे, नमाज़ पढ़ने वाले, रोज़ा रखने वाले थे, ज़रूरियाते दीन को मानते थे, ज़कात का मुतलक़न इनकार न करते थे बल्कि तावील के साथ ज़कात देने से इनकार किया था। उन पर शिद्दत व ग़िलज़त की, हत्ती कि तलवार मियान से खींच ली और ऐसे नाज़ुक हालात में ज़ब मुसलमानों के लश्कर बैरूनी ममालिक में कुफ़्फ़ार से मसरूफ़े जंग थे। ख़ारजा पालीसी पर नज़र करते हुए दाख़िला पालिसी में सियासी मस्लेहत पर नर्मी, महरबानी और इत्तिहाद न फ़रमाया और यह साबित कर दिखाया कि इस्लाम की हक़्क़ानियत यही है कि कम व ज़्यादा की मिक़दार पर नज़र न करते हुए मुरतद्दीन से इत्तेहाद नहीं किया जा सकता है। अमीरुल मोमिनीन ने फ़रमाया कि अगर तमाम के तमाम लोग एक जानिब हों और मैं तन्हा, तब भी उन मुनकिरीने ज़कात से क़िताल व जिहाद करूँगा। ख़लीफ़ए बरहक़ तो तन्हा भी होकर मुनकिरीने ज़कात से इत्तिहाद न फ़रमाएं यह सुन्नी आलिम कहलाने वाला अक़्ल का अन्धा, दिल का गन्दा मुरतद्दीने ज़माना से इत्तिहादे बातिल की दावत दे। अल अयाज़ बिल्लाहि तआला।

एक अंग्रेज़ी मुअर्रिख़ अपनी किताब में इस वाक़िआ को लिखने के बाद लिखता है कि ख़लीफ़तुल मुस्लेमीन हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का यह ज़रीं कारनामा तारीख़े इस्लाम का ऐसा अज़ीम कारनामा है जिस की वजह से दीने इस्लाम आज भी अपने अस्ली रूप में सहीह, ख़दो ख़ाल में मौजूद है और हमेशा हमेशा के लिये क़वानीने इस्लाम तग़य्युर व तबद्दुल से महफ़ूज़। और किसी को यह जुरअते बेजा नहीं कि दीन में बातिल सियासत की आमेज़िश करे।

मुतक़द्देमीने अहले हक़ उलमाए किराम व अइम्मए दीन ने ख़लीफ़ए अव्वल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के इसी किरदार व उसवए हसना को अपने अपने दौर में मिशअले राह बना कर अमल किया। देखिये क़दरियों, जिबरियों, मोअतज़ेलियों, मरजिया को जब कि उन की तकफ़ीरे क़लामी नहीं हुई है, सिर्फ़ गुमराह बद दीन कहा गया है। हालांकि यह सब नमाज़, रोज़ा व हज व ज़कात तमाम अहकामे दीन और ज़रूरियाते दीन के क़ाइल थे, उन को अहले हक़ से निकाला, उन से तर्के तअल्लुक़ किया और तर्के मवालात ही पर अमल हुआ। और ख़लीफ़ए अव्वल के इसी उसवए हसना पर इस दौरे मुताख़्ख़ेरीन में अमल किया गया और क़ादयानियों, ख़ाकसारियों, चकड़ालवियों, वहाबियों, बहाइयों, देवबन्दियों, ग़ैर मुक़ल्लिदों और बे दीनों के साथ तर्के मवालात पर अमल हुआ। कुफ़्फ़ारे अस्ली के साथ तो कुछ मराआत हमारी शरीअत ने दी है मगर उन मुरतद्दीन के अहकाम उस के बर अक्स जुदा गाना हैं। यानी उन से सलाम कलाम, उन के साथ खाना पीना, उठना बैठना और किसी भी तरह के मरासिम रखना ख़तअन क़तअन जाइज़ नहीं। सय्यदना अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से किसी ने आकर अर्ज़ की, फ़लां शख़्स ने आप को सलाम किया है। फ़रमाया:

لَا تَقْرَأْ مِنِّي السَّلَامَ فَإِنِّي سَمِعْتُ أَنَّهُ أَحْدَثَ

तर्जमा : मेरी तरफ़ से उस को सलाम न कहना मैं ने सुना हैकि उस ने कुछ बद मज़हबी निकाली है।

अपने को सुन्नी आलिम कहलाने वाला दिल की आँखें ख़ोले और अगर ग़ैरते ईमानी की रमक़ है तो तारीख़े इस्लाम के इस रौशन बाब का मुतालआ करे कि जंगे बद्र जो रमज़ान शरीफ़ में हुई, सिर्फ़ तीन सो तेरा (313) मुजाहिदीने इस्लाम, प्यारे मुस्तफ़ा अलैहित्तहिय्यतो वस्सना के गुलाम जो बे सरो सामानी के आलम में थे, किसी के तन पर सही कपड़े तक न थे, किसी के तन पर तहबन्द है तो क़मीज़ नहीं, किसी के हाथ में खजूर की छड़ी है। अगर किसी के हाथ में तलवार है तो बरहना बदन है, सिर्फ़ तहबन्द ज़ेबे तन है, न ढाल है न ज़िरह। किसी के हाथ में नेज़ा है तो और कोई सामान मयस्सर नहीं, न जंग के लिये कोई माक़ूल आलाते

जंग हैं, न कोई तय्यारी, हत्ता कि पेट भर ग़िज़ा भी मयस्सर नहीं। यहथा जंग का ज़ाहिरी हाल और इस आलम में रसूले कायनात सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम पर परवाना वार निसार होने वाले, अपनी जान व माल और आबरू कुरबान करने वाले, अपने आक़ा के दीवाने और प्यारे सिर्फ़ और सिर्फ़ तीन सो तेरा मुजाहिदीन और इधर हज़ार बा हज़ार का जम्मे ग़फ़ीर जो हर तरह से आलाते जंग से मुसल्लह थे। लेकिन तारीख़ के औराक़ गवाह हैं कि यह तीन सो तेरा ही ग़ालिब व मुज़फ़्फ़र व मन्सूर हुए और फ़र्श गीती पर रू नुमा होने वाले इस इबरत नाक मन्ज़र को दुनिया ने अपनी आँखों से देखा कि जिन्होंने तादाद पर, अस्लहा पर, माद्दियात के भरोसे पर ग़ुरुर घमण्ड किया था, तागूती ताक़तें मुत्तहिद होकर निहत्ते सर फ़रोशाने इस्लाम के सामने सफ़ आरा हुईं। शिकस्त व हज़ीमत उन का मुक़द्दर बनी।

बताए वह सुन्नी आलिम कहलाने वाला तीस करोड़ की आबादी को मुरतद्दीन, बे दीन को मुत्तहिद करके दुनिया व आख़िरत की कामयाबी का ख़्वाब देखने वाला तारीख़े इस्लाम के इस रौशन बाब को भूल गया। क्या तुम बे ईमानों , बद दीनों और मुरतद्दीने ज़माना से इत्तिहादे बातिल करके कामयाबी चाहते हो ? क्या कुरआने अज़ीम का ईमान अफ़रोज़ मुज़्दए जां फ़िज़ा याद नहीं ? कुरआने अज़ीम फ़रमा रहा है :

وَلَا تَهِنُوْا وَلَا تَحْزَنُوْا وَاَنْتُمُ الْاَعْلَوْنَ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ

तर्जमा : और न सुस्ती करो और न ग़म खाओ तुम्हीं ग़ालिब आओगे अगर ईमान रखते हो। (सूरए आले इमरान, आयत १३९)

और आयते करीमा का खुला हुआ मुज़ाहरा हुआ :

كَمْ مِّنْ فِئَةٍ قَلِيْلَةٍ غَلَبَتْ فِئَةً كَثِيْرَةًۢ بِاِذْنِ اللّٰهِ

तर्जमा : कि बारहा कम जमाअत ग़ालिब आई ज़्यादा गिरोह पर अल्लाह के हुक्म से। (सूरतुल बक़रह, आयत 249)

कहाँ है वह तीन करोड़ पर घमण्ड करने वाला जिस के ज़हन में तादाद की ज़्यादती पर ख़बासत भरी है। मुरतद्दीन से इत्तिहादे बातिल की दावत देने वाला बताए कि कितने करोड़ थे मोमिनीन मैदाने बद्र में जिन्हें अल्लाह

रब्बुल इज़्ज़त जल्ला जला लुहू ने फ़तह से सर फ़राज़ फ़रमाया, इत्तिहादे बातिल की दावत देने वाला तारीख़ के उस वाक़िआ से सबक़ हासिल करे कि ख़लीफ़ए दौम अमीरुल मोमिनीन हज़रत सय्यदना उमर फ़ारूक़े आज़म (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) के दौरे ख़िलाफ़त में एक इमाम का मस्अला पेश आया कि वह हर नमाज़ में सूरह عبس و تولیٰ ان جاءہ الاعمیٰ

(**तर्जमा :** तेवरी चढ़ाई और मुंह फेरा उस पर यह कि उन के पास नाबीना (अब्दुल्लाह इब्ने उम्मे मकतूम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) हाज़िर हुए।) की ही तिलावत करता था। हज़रत सय्यदना फ़ारूक़े आज़म (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) ने उस गांव में ज़ाकर उस इमाम से पूछा कि नमाज़ में क़ौन सी सूरत तिलावत करते हो ? उस ने कहा : सूरए अबस व तवल्ला पढ़ता हूँ। अमीरुल मोमिनीन ने पूछा सिर्फ़ यही सूरत क्यों पढ़ते हो? उस ने कहा मुझे यह सूरत पढ़ने में मज़ा आता है। इतना सुनना था कि अमीरुल मोमिनीन सय्यदना फ़ारूक़े आज़म (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) के तेवर बदल गए, जलाल में चेहरा सुर्ख़ हो गया और फ़रमाया : यह बारगाहे रिसालत पनाह से तुम्हारे दिल में इनाद है। तुम्हारे इस फ़ेअल से मुनाफ़िक़त ज़ाहिर है और सिर्फ़ इस सूरत के पढ़ने पर उस को क़त्ल कर दिया। बज़ाहिर वह इमाम जो मुसलमान था कलमए इस्लाम पढ़ने वाला, नमाज़ पढ़ने वाला, अहकामे शरीअत पर अमल करने वाला और कोई कुफ़्र न किया था। सिर्फ़ उस के इस बयान पर कि इस सूरत को पढ़ने में मज़ा आता है, उस के दिल का इनाद ज़ाहिर हुआ और ऐसा इनाद जो बारगाहे मुस्तफ़ा अलैहित्तहिय्यतो वस्सना में इहानत आमेज़ था, सिर्फ़ इस बुनियाद पर कलमा पढ़ने वाला न देखा, नमाज़ पढ़ाना न देखा, इस्लामी सूरत न देखी, मुसलमानों का इमाम होना न देखा, अहकामाते इस्लामी का मानना और इस पर अमल करना न देखा, दिल का चोर पकड़ा गया, जिस दिल में अज़मते मुस्तफ़ा व महब्बते रसूल सल्लल्लाहु तआलाअलैहि वसल्लम न हो मुनाफ़िक़त है। उस को फ़ारूक़े आज़म (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) ने क़त्ल करके वासिले जहन्नम कर दिया। तमाम नजदियों, वहाबियों और देवबन्दियों के इमाम इब्ने तैमिया की

किताब الصارم المسلول على شاتم الرسول में भी हज़रत फ़ारूक़े आज़म (रज़ियल्लाहु अन्हु) का इस इमाम को क़त्ल करने का वाक़िआ मौजूद है

हर साहिबे इल्म व इन्साफ़ पर जो तारीख़ व सियर से वाक़िफ़ है, ख़ूब रौशन है कि हज़रत मौलाए कायनात अली मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा (कर्रमल्लाहु वजहहुल करीम) ने वह ख़वारिज जो पांचों वक़्त नमाज़ पढ़ते थे, क़ुरआन की तिलावत करते थे, तहज्जुद गुज़ार थे, इबादत करने वाले थे, रोज़ा रखते थे, दाढ़ी वाले थे, तमाम अहकामे इस्लामी के मानने वाले थे, किसी चीज़ का ख़याल न फ़रमाया, उन के साथ याराना न किया, दोस्ताना न मनाया, बल्कि जंगे हज़वान (एक शहर है) में पाँच हज़ार ख़ारजियों को क़त्ल कर दिया और जब उन ख़ारजियों ने क़ुरआन को नेज़े पर उठाया और क़ुरआन की अमान मांगी तो मुजाहेदीन की पेश क़दमी रुक गई। हज़रत मौलाए कायनात (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) ने पूछा क्या वजह है कि जंग आगे नहीं बढ़ रही है, जिहाद क्यों मौक़ूफ़ हुआ ? तो मुजाहेदीन ने जवाब दिया कि यरोशलम के कुफ़्फ़ार भी अमान मांगते तो उन को अमान दी जाती, यह तो मुसलमान हैं, कलमा पढ़ने वाले हैं, नमाज़, रोज़ा, हज, ज़कात और दीगर अहकामे इस्लामी अदा करने वाले हैं, क़ुरआन पढ़ने वाले, क़ुरआन को सीने से लगाने वाले, क़ुरआन को नेज़ों पर बलन्द करके क़ुरआने अज़ीम की अमान मांग रहे हैं, तो उन्हें क्यों न अमान दी जाएगी। इस वजह से जंग मौक़ूफ़ कर दी गई है। तो हज़रत मौलाए कायनात मुस्तफ़ा प्यारे सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के ज़ीग़म दिलेर अमीरुल मोमिनीन मौला अली (कर्रमल्लाहु वजहहुल करीम) को जलाल आ गया और फ़रमाया : اقتلوهم فانهم مشركون। क़त्ल करो यह सब मुशरिक हैं। पाँच हज़ार क़त्ल हुए और बाक़ी कसीर जमाअत ने तौबह की। उन की क़िब्ला रुई, कलमा गोई का कुछ भी लिहाज़ न फ़रमाया। तलवार के घाट जहन्नम पहुँचा दिये।

अब बताए वह सुन्नी आलिम कहलाने वाला तीस करोड़ आबादी पर घमण्ड व गुरूर करने वाला, जिन की अक़्ल पर परदे पड़े हुए हैं, दिल की आँखें खोले कि ऐसे ऐसे लोगों के साथ हज़रत मौला अली कर्रमल्लाहु वजहहुल करीमने इत्तिहाद न किया।

अगर तादाद की ज़्यादती पर ही कामयाबी मौक़ूफ़ होती तो बताओ कि करोड़ का लश्कर था कि जब ग़ाज़िये इस्लाम महमूद ग़ज़नवी ज़ुल्म व इस्तिबदाद और बातिल परस्ती की सरकोबी के लिये मैदाने कारज़ार में आए, अलमे तौहीद बलन्द फ़रमाया, अद्ल व इन्साफ़ व ईमान की रोशनी से एक आलम को जगमगा दिया और बाशिन्दगाने हिन्द परचमे तौहीद के तले ईमान की चाश्नी पाकर अमन व अमान की सांस ले रहे थे। जब बातिल परस्तों का हर तरफ़ दौर दौरा था, जब राजाओं, जागीरदारों और ऊँची बिरादरियत पर घमण्ड करने वालों का ज़ुल्मो सितम इस हद तक बढ़ा कि नीची बिरादरियों को अछूतों और हरीजन को गुलाम बे दाम बनाते, एक धर्म होने के बावजूद भी अपने सनम ख़ानों में न आने देते थे। मसाइब व आलाम के पहाड़ तोड़े जाते थे। इन्सानियत से हट कर जानवरों की तरह सुलूक किया जाता था, ज़ुल्म व बरबरियत का बाज़ार गर्म था। अमन व अद्ल व इन्साफ़ का गला घोंट दिया गया था। जमहूरी क़द्रों का यकसर निशान मिटा दिया गया था उन पिछड़ी ज़ातों का हरीजनों और कमज़ोर ग़रीब तबक़े पर अर्सए हयात तंग कर दिया गया था। तो उस कर्ब को महसूस कर के ग़ाज़ी महमूद ग़ज़नवी ने इस ज़ुल्मो इस्तिबदाल के ख़िलाफ़ अद्लो इन्साफ़ क़ाइम करने के लिये अमन व ईमान के परचम लहराने के लिये महाज़ आराइयां कीं। और जिस तरफ़ भी गए परचमे अद्लो इन्साफ़ व ईमान बलन्द फ़रमाया। शम्ए ईमान की रोशनी से लोगों के क़ुलूब को चैन व इत्मीनान नसीब हुआ, तो कितने करोड़ का सहारा ले कर आए थे। हज़रत सय्यदी सालार साहू और सय्यद सालार मस्ऊद ग़ाज़ी अजमेर शरीफ़ व क़न्नोज होते हुए सतरख और बहराइच में परचम लहराए ईमान व अमान की दौलत से लोगों को सरफ़राज़ फ़रमाया कितने करोड़ का लश्कर ले कर आए थे। मुहम्मद बिन क़ासिम और तारिक़ बिन ज़ियाद वग़ैरह (मौलाए करीम जल्लो उला उनकी क़ब्रों पर रहमतों के फूल बरसाए) जब हिन्दू संथ पर ज़ुल्म व जबरो इस्तिबदाद के ख़िलाफ़ अद्लो इन्साफ़ व ईमान की शम्ए ले कर आए तो कितने करोड़ थे। जिन्होंने अपनी कुव्वते ईमानी और इश्क़े रसूल अलैहिस्सलातो

वत्तस्लीम में सरशार हो कर बिसाते आलम का नक़्शा बदल दिया।

तारीख़ का रुख़ मोड़ते हुए यह भी कहा जाता है कि इस्लाम तलवार के ज़ोर से फेला और लोग तलवार के ख़ौफ़ से मुसलमान हुए। यह सरासर हक़ाइक़ के ख़िलाफ़ है। अलबत्ता तलवार, तब्लीग़े अद्लो इन्साफ़ का वसीला थी। हालांकि जब भी असाकिर मुस्लेमीन ने ऐसी मअरका आराइयाँ की हैं और ताग़ूतियत के बुतलान के लिये अद्लो इन्साफ़ और इस्लाम की रोशनी से आलम को मुनव्वर कर के लोगों को इत्मीनान व चैन से ज़िन्दगी बसर करने के लिये कामयाबीए दुनिया व आख़िरत के लिये और रज़ाए मौला (जल्लो उला) के लिये क़िताल व जिहाद किया है तो यह अहकामात जारी होते थे। बुतख़ानों और कलीसाओं को न तोड़ा जाएगा। उन के पुजारियों, राहिबों पर हाथ न डाला जाएगा। औरतों बच्चों और बूढ़ों से क़तअन बाज़ पुर्स न की जाएगी और जो ग़ैर मुस्लिम ज़िम्मी कुफ़्फ़ार हैं चाहे मुशरेकीन हों, यहूदी हों, ईसाई वग़ैरह हों उन के बारे में हदीस शरीफ़ में फ़रमाया कि : دمائهم كدمائكم واموالهم كاموالكم

इन ग़ैर मुस्लिमों के ख़ून, माल यानी जान, माल, तुम्हारी जान, माल की तरह हैं। यानी जैसे अपनी जान व माल की हिफ़ाज़त करोगे वैसे ही इन ग़ैर मुस्लिमों की जान व माल की, इज़्ज़त व आबरू की हिफ़ाज़त करनी होगी और इन ज़िम्मी ग़ैर मुस्लिमों के साथ अद्ल व इन्साफ़ किया है वह एक हिन्दू हाकिम भी हिन्दुओं के साथ नहीं कर सकता है। सिर्फ़ इस का तफ़सीली जाइज़ा लिखा जाए तो एक किताब हो जाए। अलबत्ता मुसलमान अपने दीन मज़हब के ख़िलाफ़ न गए और न उस की मुख़ालिफ़त की। ईसाई, यहूदी, हिन्दू वग़ैरहुम अपने अपने धर्म पर अमल करते रहे और मुसलमान अपने मज़हब पर अमल करते रहे न किसी का बुत ख़ाना तोड़ा गया, न किसी का कलीसा व हैकल तोड़ा गया सुबूत के लिये कुतुबे तवारीख़ में सैकड़ों वाक़ेआत मौजूद हैं और क्या यह रौशन गवाहियां काफ़ी नहीं? इत्तिहादे बातिल व क़ौमी यक जहती से मुल्की व क़ौमी अमन व तरक़्क़ियों का ख़्वाब देखने वाला, अपने को सुन्नी आलिम कहलाने वाला तारीख़ के इन रौशन औराक़ का मुतालआ करे और अपने ज़हन की गन्दगी का इलाज करे। और मज़हबे इस्लाम पर

तलवार के ख़ौफ़ का इल्ज़ाम देने वाले यह भी देखें कि आज जो अपना कलमा पढ़ते हैं, रोज़ा रखते हैं, हज भी करते हैं, ज़कात भी देते हैं, ज़ाहिरन इस्लामी सूरत है, अहकामे इस्लामी अदा करते हैं, जैसे क़ादयानी, राफ़ज़ी, वहाबी, देवबन्दी, नज्दी, वग़ैरहुम को हम मुसलमान नहीं ज़ानते और इन को अपनी मसाजिद में आने से रोकते हैं, अपने क़ब्रिस्तान में उन के मुर्दे दफ़्न नहीं होने देते, उन से मेल जोल, उन के साथ खाने पीने को रवा नहीं जानते, उन से शादी ब्याह, उन के साथ नमाज़ नहीं पढ़ते न उन की नमाज़े जनाज़ा पढ़ने का हुक्म देते हैं , और उन से दूर रहने का हुक्म देते हैं , जब कि हिन्दुओं के यहाँ खाने पीने से परहेज़ का हुक्म नहीं देते मगर यह कलमा, नमाज़ , रोज़ा और ज़ाहिरन अहकामे इस्लामी अदा करने वालों को हदीस व कुरआन और फ़रमूदाते अइम्माए किराम की रोशनी में उन को मसाजिद में आने से रोकते हैं और तर्क मवालात का हुक्म देते हैं क्या यह शवाहिद काफ़ी नहीं ? हिन्दूस्तान या दीगर ममालिक में न इस्लामी हुकूमत है न इस्लामी शरीअत नाफ़िज़ है। फिर भी लोग मुशर्रफ़ बा इस्लाम हो रहे हैं न कोई तलवार चल रही है, न जिहाद हो रहा है, हाँ ! यह ज़रूर है कि मुसलमान अपने दीनो मज़हब के ख़िलाफ़ न गए और न कभी उस की मुख़ालिफ़त की। जैसे मुरतद अकबर बादशाह ने क़श्क़े लगाए, पूजा की, होली खेली जिस से मुसलमानों ने इज्तिनाब किया لکم دینکم पर अमल किया तो कौन सा जुर्म किया। तहरीके ख़िलाफ़त में उसी तौहीद व कलमे की बुनियाद पर सिर्फ़ बे दीनों, मुरतद्दों का इत्तिहाद नहीं हुआ बल्कि मुशरेकीन के साथ भी इत्तिहाद के गाने बजाए गए।

वाक़ेआत माज़िया एक किताब चाहते हैं मुश्ते नमूना अज़ ख़िरवारे के तौर पर इस ख़िलाफ़त कमेटी ने एक तहरीक चलाई, जिस का नाम था नान को ऑप्रेशन इस तहरीक का मक़सद ग़ैर मुलकियों यानी अंग्रेज़ों के सरमाए का बायकाट और अंग्रेज़ों की मुलाज़मत हराम। फिर उस के नताइज किया हुए हैं कि हर तरफ़ से मुसलमानों पर बरबादी व हलाकत के तूफ़ान रूनुमा हुए, ज़ुल्म व बरबरियत का यहाँ तक मुज़ाहिरा हुआ कि जान व माल, इज़्ज़त व आबरू बरबाद हुई और मुसलमानों के हाथ तबाही के सिवा कुछ न आया और मुसलमान मसाइब उठा कर होश

में आए। ख़िलाफ़त कमेटी से बेज़ार हुए और ख़िलाफ़त कमेटी भी हलाकत कमेटी होकर फ़ना के घाट उतर गई न इत्तिहाद बाक़ी रहा, न अमन व अमान क़ाइम रहा न उन के शैतानी ख़्वाब शर्मिन्दाए ताबीर हुए। जिस की क़दरे तफ़सील हज़रत मुफ़्ती शरीफ़ुल हक़ साहब अमजदी ज़ीदत फ़्यूज़हुम (अलैहिर्रहमा) के रिसाले अश्के रवां में और दीगर कुतुबे साबिक़ा में देखें। अबभी वह सुन्नी आलिम कहलाने वाला आँखें खोले, मुरतद्दीन, बद दीन, मुनाफ़िक़ीन से इत्तिहाद करके क्या हासिल हुआ ? और अब क्या हासिल करेगा ?

एक जाहिल दुनियावी मफ़ाद परस्त मुक़र्रिर जो तर्क मवालात क्या है, जानता ही नहीं। मसाइले शरअ का मज़ाक़ उड़ते हुए कहता है कि अगर मुरतद्दीन से दूर व नुफ़ूर का यही हुक्म होगा तो कोई बस कन्डक्टर वहाबी है उस से टिकट लेलिये तो वह वहाबी हो गया, रेलवे बुकिंग पर अगर वहाबी टिकट देने वाला है उस से टिकट ले लिया तो वहाबी हों गया किराना की दुकान पर जाए अगर वह वहाबी है तो उस से सौदा ख़रीद लिया वहाबी हो गया, कोई मरीज़ किसी हकीम व डाक्टर जो वहाबी है उस से दवा ले ली वह वहाबी हो गया, बाज़ार में कोई दुकान दार वहाबी हो उस से सौदा ख़रीदा वहाबी हो गया, कोई टेक्सी या रिक्शे वाला वहाबी हो तो उस पर बेठा हुआ वहाबी हो गया, बस या रेल या और किसी सवारी पर जिस सीट पर बेठा बग़ल में कोई वहाबी बैठ गया तो वह वहाबी हो गया, कचेहरी में कोई वकील या जज वहाबी है उस से मुक़दमा में वकालत या फ़ैसला लिया तो वह वहाबी हो गया, हुकूमत के दफ़ातिर में गवर्नमेन्ट के अम्माल से मुआमलात के लिये मुलाक़ात की वहाबी हो गया वग़ैरह वग़ैरह। इस तरह की अपनी तक़रीरों में बकवा सकरता है। बताओ....... यह तर्के मवालात का मज़ाक़ नहीं तो क्या है और शरअ इस्लाम का मज़ाक़ उड़ाता है या नहीं....? तर्के मवालात बा मुरतद्दीन क़तई यक़ीनी मस्अला है और इन उमूर को तर्क मवालात से क़तअन कोई तअल्लुक़ नहीं। यह चीज़ें या तो ज़रूरियात में दाख़िल हैं या हवाइज में शामिल या मुआमलात में दाख़िल, मवालाते क़ल्बी कुफ़्र है और ज़ाहिरी तौर पर शादी ब्याह में बुलाना अशद हराम है।

इस नादान को इतना भी नहीं मालूम कि किसी बड़ी शख़्सियत का क़ौल व अमल ख़िलाफ़े शरअ हुज्जत नहीं , बल्कि अगर वह शख़्सियत मुस्लिम है तो उस के इस ख़िलाफ़े शरअ क़ौल व फ़ेअ़ल की तावील व तौजीह की जाएगी। यह इलहाक़ है या यह अमल व क़ौल हालत सक्र व जज़्ब का है। क्या आरिफ़ के कलाम में यह न आया कि :

لو ائی افضل من لواء محمد صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم معاذ المولیٰ
تعالیٰ منہ و لہ امثال کثیرۃ و الا لیرتفع الایمان عن الشریعۃ

इस मज़मून को क़दरे तफ़सील से मुतसल्लिब फ़िद्दीन बिरादरे दीनी अन्सार जामी साहब रज़वी अरबी ज़ीदत अमसोलुहुम को लिख चुका हूँ

इस मज़मून से नाम निहाद इत्तिहादियों और उलमा कोंसिल का रद्दे ताम माला कलाम हो गया। इस मस्अलए क़तइय्या यक़ीनिया इज्माइया में अगर मुआरिज़ा या मुख़ालिफ़त की जाए और उस के इस्तिदलाल में आरिफ़े हक़ हुज़ूर मुजाहिदे मिल्लत अलैहिर्रहमा की तहरीके ख़ाकसाराने हक़ को पेश किया जाए तो उस का इज्मालन कुल्लियतन जवाब यह है कि :

افعال العرفاء الکاملین والمشائخ واقوالھم اذا کانت مخالفۃ
للشرع والاجماع لا یجوز ان یستدل بھا بل یؤول بالسکر والجذب
والتحریف وغیرہ ذلك والا لیرتفع الامان عن الدین

अब इस की मज़ीद क़दरे वज़ाहत के लिये वाक़िआ तहरीर करता हूँ कि हज़रत मुजाहिदे मिल्लत अलैहिर्रहमा पीली भीत तशरीफ़ लाए और कुछ किताबें तलब फ़रमाएं और फ़क़ीर हक़ीर को भी कटक के मुनाज़िरे के लिये तलब फ़रमाया।

हज़रत शेरे बेशए अहले सुन्नत अलैहिर्रहमा के मज़ार शरीफ़ के इहाते में उत्तर जानिब क़याम पज़ीर थे और फ़क़ीर ने ख़ाकसाराने हक़ तहरीक पर गुफ़्तुगू शुरूअ की और बा अदब अर्ज़ किया कि हुज़ूर ! आज तर्के मवालात का मज़ाक़ उड़ाया जा रहा है और जो हश्मती सब से ज़्यादा सख़्त कहलाते थे, वह भी पिलपिले हो गए उन के कितने देवबन्दियों से तअल्लुक़ात हो गए तो फिर इस पन्ज गुप माजून में बिला किसी तफ़रीक़ के वहाबी, देवबन्दी, राफ़ज़ी, क़ादयानी, व ग़ैरहुम भी शरीक होंगे, तो

फिर सुन्नी मुसलमानों का क या उन के साथ सलाम व मुसाफ़हा न होगा ? साथ में नमाज़ न पढ़ेंगे, साथ में खाना पीना न होगा, उठना बैठना न होगा, और उस से कितना अज़ीम नुक़सान होगा तो बर जस्ता फ़रमाया बे शक सही कहते हो। फिर फ़क़ीर ने साफ़ तौर पर कहा हुज़ूर ! मुआफ़ फ़रमाएं, हुकूमत समझती है कि एक पागल दीवाना है चार, दस को लिये घूमता है। हमारा क्या बिगाड़ेगा, लेकिन हज़रत ! जब आप की यह तहरीक तरक़्क़ी पज़ीर होगी और तहरीक ज़ोर पकड़ेगी तो हुकूमत आप ही लोगों में से कुछ लोगों को ख़रीद कर तहरीक को फ़ना के घाट उतार देगी। जब सुन्नी मुसलमान बिक जाते हैं तो उस में तो देवबन्दी, वहाबी पहले ही से बिके हुए हैं इस बात पर हज़रत मुजाहिदे मिल्लत अलैहिर्रहमा जोशे मसर्रत से उछल पड़े और फ़रमाया बिल्कुल ठीक कहते हो, मगर मैं क्या करूँ ? मुशरिकीन के मज़ालिम से तंग आकर मुसलमान कम्युनिज़म की तरफ़ बढ़ता जा रहा है। अब मुशाहिद मियां ! तुम इस का मुतबादिल बताओ। बस गुफ़्तुगू यहीं पर ख़त्म हो गई और हज़रत तशरीफ़ ले गए।

अब अहले अक़्ल व इन्साफ़ जवाब दें कि जब हज़रत को भी यह एतिराफ़ था कि जब तहरीक ताक़त पकड़ लेगी और हुकूमत का मुक़ाबला करेगी तो हमारी तहरीक के आदमियों को ख़रीद कर तहरीक को फ़ना के घाट उतार दे गी। तो यह फ़ेअले अबस होने के अलावा दीन का जो अज़ीम नुक़सान हज़रत को भी तस्लीम था तो इस तहरीक से क्या फ़ायदा निकला? और यहाँ पर यह ज़रबुल मसल साबित आई कि नहीं : لدوا للموت وابنوا للخراب तो फिर इत्तिहादियों को इस से इस्तिदलाल करना और ख़बासतों को उस के परदे में छुपाना क़तअन हराम व नाजाइज़ कुफ़्रे अन्जाम है। अकसर उलमाए किराम इस तहरीक के मुख़ालिफ़ थे सिवाए चन्द के जो उन के तलामिज़ा में थे। मगर हुज़ूर मुजाहिदे मिल्लत अलैहिर्रहमा के रोअबे इल्मी और जलालते शान की वजह से ख़ामोश रहे हज़रत पास्बाने मिल्लत अल्लामा मुश्ताक़ अहमद साहब निज़ामी जो हज़रत के तिलमीज़े रशीद भी थे और हज़रत की बारगाह के इतने क़रीब थे कि हमेशा अपने को असीरे हबीब लिखते थे और अल्लामा फ़सीही ग़ाज़ी पूरी अलैहिर्रहमा वग़ैरह ने भी इस तहरीक की ताईद न की। इस तहरीक का

वही हुक्म है जो नदवा मख़ज़ूला का था

(1) मौलाए कायनात रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया :

الرجال بالحق لا الحق بالرجال

(2) दुनिया में एक शख़्स अकेला पहाड़ पर कहे कि ख़ुदा एक है और सारी दुनिया कहे कि ख़ुदा दो हैं तो यही अकेला सवादे आज़म है और सब काफ़िर। यह दावए इत्तिहादे बातिल व दावए कामयाबी दुनिया व आख़िरत का नापाक मन्सूबा क़ुरआन के ख़िलाफ़ है और ऐसा चाहने वाला दुश्मने दीन है। ख़ारिज अज़ इस्लाम है। इमामुत्तसव्वुफ़ हज़रत अल्लामा जलालुद्दीन रूमी क़ुद्दिसा सिर्रहू क्या ही ख़ूब फ़रमाते हैं :

दौरे शिवाज़ इख़्तिलाते यारे बद
यारे बद बदतर बुवद अज़ मारे बद

यानी बद मज़हब दोस्त से दूर भाग उस की सोहबत में न बैठ क्यों कि बद मज़हब दोस्त ज़हरीले सांप से भी बद तर है और फिर फ़रमाते हैं :

मकन रू बाह बाज़ी शेरे बाश बर सरे आदाए दीं शमशीर बाश

यानी ऐ मुसलमान सुनता है ! दीन, मज़हब के मुआमले में लोमड़ी की तरह पालिसी बाज़ी, मक्कारी मत कर बल्कि शेर बन जा और दुश्मनाने दीन के सरों पर तलवार बन जा। अल्लामा रूमी क़ुद्दिसा सिर्रहू तो उन मुरतद्दीन, बद दीन, मुनाफ़िक़ीन, बद दीनों से दूर रहने को फ़रमाएं और अपने को दूर रखने को फ़रमाएं न कि उन से दोस्ताना।

(1) और इस तहरीक से इज्तिनाब व एहतिराज़ ज़रूरी है और इस में शिरकत नाजाइज़ है।

(2) यानी आदमी हक़ पर है तो हक़ मानो न कि बड़ी शख़्सियत की वजह से किसी के क़ौल व फ़ेअल को हक़ मानो। याराना और इत्तिहाद न करे और यह सुन्नी आलिम कहलाने वाला और जाहिल मुक़र्रिर अस्लाफ़े किराम और शरअ का मज़ाक़ बनाने वाला इत्तिहादे बातिल की दावत दे। दुनिया व आख़िरत व हयात व ममात में क़ामयाबी की उम्मीदे फ़ासिद रखे हदीस शरीफ़ में है : اهل البدع کلاب اهل النار यानी बद मज़हब लोग जहन्नमियों के कुत्ते हैं। मुसलमानों को इन बद मज़हबों, जहन्नमी कुत्तों से कम अज़ कम इतना दूर रहना चाहिये जितना दुनियावी ज़हरीले

दीवाने कुत्ते से दूर रहता है। यह बे दीना ने ज़माना क़ादयानी, वहाबी, देवबन्दी, बाबी, बहाई, ख़ाकसारी, अहरारी, नेचरी वग़ैरहा यह सब फ़िरक़हाए बातिला सिर्फ़ और सिर्फ़ अंग्रेज़ों के जन्म दिये हुए हैं इस्लाम की बेख़ कनी के लिये सुबूत के लिये उन्हीं की किताबें देखें। ....फ़तावा रशीदिया, तवारीख़े अजीबा वग़ैरहा। और नज्दी वहाबी की तारीख़ देखना हो तो, हमफ़िरे के एतिराफ़ात देखिये। नज्दी वहाबी दुश्मनाने इस्लाम हैं। इस सुबूत में हुसैन अहमद अजुदहिया बाशी अल मअ़रूफ़ ब मदनी शैख़ुल हदीस दारुल उलूम देवबन्द की किताब अश्शहाबुस्साक़िब देखे। अल्लाह अज़्ज़ व जल्ला फ़रमाता है :

واما ينسينك الشيطن فلا تقعد بعد الذكرى مع القوم الظلمين

तर्जमा : अगर शैतान तुझे भला दे तो याद आने पर पास न बैठ ज़ालिमों के। तफ़सीराते अहमदिया में है : دخل فيه الكافر والمبتدع

इस आयत के हुक्म में हर काफ़िर व मुब्तदअ दाख़िल है। इब्ने हब्बान और तबरानी में हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं :

لا تؤاكلوهم ولا تشاربوهم ولا تجالسوهم ولا تناكحوهم واذا مرضوا فلا تعودوهم واذا ماتوا فلا تشهدوهم ولا تصلوا عليهم ولا تصلوا معهم

तर्जमा : उन के साथ खाना न खाओ, उन केसाथ पानी न पियो, उन के साथ न बैठो, उन से रिश्ते न करो, वह बीमार पड़ें तो पूछने न जाओ, मर जाएं तो जनाज़ा पर न जाओ, न उन की नमाज़ पढ़ो, न उन के साथ नमाज़ पढ़ो, फ़रमाने मुस्तफ़ा अलैहिस्सलातो वस्सलाम से ग़ाफ़िल अपने को सुन्नी आलिम कहलाने वाला अब भी बेदार न होगा। प्यारे आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फ़ितनों से बचाएं, अमान की तरफ़ बुलाएं और यह नादान अपने नफ़्स पर ज़ुल्म करने वाला उसी के क़रीब जाए।क्या सरवरे कोनो मकां ने तुम को आगाह न फ़रमाया कि :

اياكم واياهم لا يضلونكم ولا يفتنونكم

उन से दूर रहो और उन को अपने से दूर करो, कहीं वह तुम्हें गुमराह न कर दें, कहीं वह तुम्हें फ़ितना में न डाल दें। हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम तो यह फ़रमाएं :

من اعرض عن صاحب بدعة بغضاله ملا الله قلبه امنا و ایمانا و من انتهر صاحب بدعة امنه الله تعالیٰ یوم الفزع الاکبر و من اهان صاحب بدعة وفعه الله فی الجنة مائة درجة و من سلم علیٰ صاحب بدعة او لقیه بالبشریٰ او استقبله بما یسره فقد استخف بما انزل علیٰ محمد ﷺ

तर्जमा : यानी जो किसी बद मज़हब को उस की बद मज़हबी की वजह से दुश्मन जान कर उस से मुंह फेरे अल्लाह तआला उस का दिल अमान व ईमान से भर दे और जो किसी बद मज़हब को झिड़के अल्लाह तआला उसे उस बड़े घबराहट के दिनअमान दे और जो किसी बद मज़हब की तज़लील करे अल्लाह तआला जन्नत में उस के सौ दरजे बलन्द फ़रमाए और जो किसी बद मज़हब को सलाम करे या उस से ख़ुशी के साथ मिले .या उस के सामने ऐसी बात करे जिस से उस का दिल ख़ुश हुआ, उस ने हलकी जानी वह चीज़ जो उतारी गई मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम पर। देखे वह सुन्नी आलिम कहलाने वाला बद बातिन कि बद मज़हब व बद दीन से दूर व नुफ़ूर रहने वाले पर क्या क्या रहमतें हैं और उन से याराना, भाई चारा रचाने वाले पर कैसी कैसी वईदें। तफ़सीरे हक़ाइक़ुल तन्ज़ील में है :

قال سهيل بن عبد الله التستوی من صحح ایمانه و اخلص توحیده فانه لا یانس الیٰ المبتدع و لا یجالسه و لا یؤاکله و لا یشاربه و یظهر له العداوة و من داهن بمبتدع سلبه الله تعالیٰ جلاوة الایمان و من تحبب الیٰ مبتدع نزع نور الایمان من قلبه

यानी जो शख़्स अपने ईमान को सहीह व दुरुस्त करेगा और तौहीदे इस्लाम का इक़रार करेगा, तो यक़ीनन वह शख़्स किसी बद मज़हब व बद दीन से उनसियत व दोस्ती नहीं रखेगा और न उस के साथ बैठे उठेगा और न उस के साथ खाए पियेगा और उस बद मज़हब की अदावत व दुश्मनी ज़ाहिर करेगा और जो बद मज़हब के साथ मुदाहनत करेगा, अल्लाह तआला उस से ईमान की चाश्नी को छीन लेगा और जो बद मज़हब के

साथ दोस्ती रखेगा तो अल्लाह तआला उस के दिल से ईमान का नूर निकाल लेगा। वल अयाज़ बिल्लाहि तआला।

अज़ीज़ बिरादराने अहले सुन्नत ! ख़बरदार होशियार ऐसे बद बातिन, कोर चश्म इत्तिहादे बातिल की दावत देने वालों से। याद रखो और अपने लोहे क़ल्ब पर यह नक़्श कर लो। आक़ाए दो आलम हबीबे अकरम सरवरे इन्स व जां सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की दिल व जान से महब्बत ही ऐन ईमान और ईमान की जान है।

और यह महब्बत हर गिज़ सच्ची और तमाम नहीं होती, जब तक हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के दुश्मनों, मुरतद्दीन, मुनाफ़िक़ीन, मुब्तदेईन, राफ़ज़ी, क़ादयानी, नेचरी, देवबन्दी, वहाबी, ग़ैर मुक़ल्लिद, बद दीनों, ख़ाकसारी, अहरारी, बाबी, बहाई, ख़ारजी वग़ैरहुम से क़ल्बी नफ़रत, दिली अदावत और इन से एहतिराज़ व मुजानबत न हो। उन सब से दूर व नुफ़ूर रहो और उन से अपनी बे ज़ारी का इज़हार करो। इसी में तुम्हारी कामयाबी व इसलाहे दुनिया व फ़लाहे दुनिया व फ़लाहे नजाते आख़िरत है।

और इसी में अल्लाह जल्ला शानहू उस के प्यारे हबीब सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की रज़ा मन्दी हासिल होगी और इसी पर अमल कर के हमेशा ग़ालिब व मुज़फ़्फ़र व मन्सूर होगे।

واللہ ورسولہ اعلم جل جلالہ وصلی المولیٰ تعالیٰ علیہ

وعلیٰ آلہ وسلم

امر برقمہ وقال بفمہ الفقیر الی ربہ الغنی القدیر محمد مشاهد رضا

خان غفر لہ ربہ الغفور البصیر بجاہ حبیبہ البشیر النذیر علیہ

وعلی الہ وصحبہ الصلوٰۃ والسلام من الصغیر والکبیر

तंबीह : जुमला सुन्नी भाई रज़वी हश्मती हज़रात इन्हीं इरशादाते कुरआनिया व अहादीसे करीमा को और अइम्मए दीन व फुक़हाए किराम अलैहिमुर्रहमतो वर्रिज़वान के फ़रामीन को जो इस में दर्ज हैं अपना दस्तूरे अमल बनाएं। ख़ुद अमल करें और दूसरे भाइयों को तब्लीग़ कर के आमिल बनाएं और इरशादाते कुरआनिया व अहादीसे करीमा व फ़रामीने अइम्मए किराम के ख़िलाफ़ जिस पीर को, जिस अलिम को, जिस मौलवी को देखें उस से दूर व नुफ़ूर और अलैहदा व बेज़ार हो जाएं। मौलाए ग़फ़्फ़ार (जल्लो उला) इसपर अमलकी हम सब भाइयों को हमेशा तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन बजाहि हबीबिहिल करीम अलैहि व अला आलिही वसहबिहिस्सलातो वत्तस्लीम।

सरकार आला हज़रत का आख़री फ़रमान
सुन्नी मुसलमानों के नाम

मेरा दीनो मज़हब मेरी किताबों से ज़ाहिर है....

तुम मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की भोली भेड़े हो। भेड़िये तुम्हारे चारों तरफ़ हैं। यह चाहते हैं कि तुम्हें फ़ितने में डाल दें, तुम्हें अपने साथ जहन्नम में ले जाएं, उनसे बचो और दूर भागो। देवबन्दी हुए, राफ़ज़ी हुए, नेचरी हुए, क़ादयानी हुए, चकड़ालवी हुए। ग़रज़ कितने ही फ़िर्क़े हुए जिन्होंने इन सबको अपने अन्दर ले लिया। ये सब भेड़िये हैं। तुम्हारे ईमान की ताक में हैं, इनके हमलों से अपना ईमान बचाओ जिससे अल्लाह व रसूल जल्ला जलालुहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की शान में अदना तौहीन पाओ फिर वो तुम्हारा कैसा ही प्यारा क्यूँ न हो फ़ौरन उससे जुदा हो जाओ जिसको बारगाहे रिसालत सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम में ज़रा भी गुस्ताख़ देखो, फिर वो तुम्हारा कैसा ही बुज़ुर्ग मोअज़्ज़म क्यूँ न हो अपने अन्दर से उसे दूध की मक्खी की तरह निकालकर फेंक दो, मैं पौने चौदह बरस की उम्र से यही बताता रहा और इस वक़्त फिर यही अर्ज़ करता हूँ जिसने इसे सुना और माना क़ियामत के दिन उसके लिये नूर व नजात है और जिसने न माना उसके लिये ज़ुल्मतो हलाकत है। यह तो ख़ुदा और रसूल जल्ला जलालुहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की वसीय्यतें हैं जो यहाँ मौजूद हैं सुनें और मानें और जो यहाँ मौजूद नहीं तो हाज़िरीन पर फ़र्ज़ है कि ग़ाइबीन को इससे आगाह करें। हत्तल इमकान इत्तिबाए शरीअत न छोड़ो और मेरा दीनो मज़हब जो मेरी कुतुब से ज़ाहिर है उस पर मज़बूती से क़ायम रहना हर फ़र्ज़ से अहम फ़र्ज़ है (माख़ूज़ अज़ वसाया मुबारका हुज़ूर सय्यदी सरकार आला हज़रत इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे आज़म दीनो मिल्लत फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु)

ASKARI ACADEMY

Dargah Mazhar-e-Ala Hazrat, Khanqah-e-Aaliya Hashmatia
Hashmat Nagar, Pilibhit Shareef, Mob.: 8307029706, 9760863598
E-mail : askariacademy6@gmail.com